किसानों की तरह पारंपरिक चिकित्सक भी मानते हैं केंचुओं को उपयोगी

*** 12 प्रकार के रोगों की चिकित्सा में उपयोगी**

*** छत्तीसगढ़ का अनूठा पारंपरिक औषधीय ज्ञान**

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि पारंपरिक चिकित्सक केचुओं, जिन्हे स्थानीय भाषा में गेंगरुआ भी कहा जाता है, का प्रयोग आंतरिक और बाहरी तौर पर 18 प्रकार के रोगों की चिकित्सा मे करते है। केंचुओं का प्रयोग वनौषधियों के साथ भी किया जाता है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि राज्य के पारंपरिक चिकित्सक मुख्य तौर पर मूत्र रोगों की चिकित्सा मे केंचुओं का प्रयोग करते है। केचुओं के मृत शरीर का पेडू पर लेप मूत्र प्रवाह को खोलता है। वहीं रोगो की बढ़ी अवस्था मे रोगियों का केचुओं का काढ़ा दिया जाता है। प्रसव के बाद महिलाओं को खोयी हुई ऊर्जा वापस लौटाने के लिये पारंपरिक चिकित्सक कई औषधि मिश्रणों का प्रयोग करते है। इन मिश्रणों मे केचुएं अहम भूमिका निभाते है। राज्य के दक्षिण भाग के पारंपरिक चिकित्सक मांस के सही पाचन के लिये केंचुओं को सहायक मानते है। गंडई - सालेवारा क्षेत्र मे नवविवाहितों को केंचुओं और इनसे बने व्यंजन खाने की सलाह दी जाती है। यह पुरुषों के लिये उत्तम बलवर्धक है। राज्य के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक सरसों के तेल में केंचुओं को उबालकर औषधि तेल का निर्माण करते है। यह तेल त्वचा रोगों के लिये विशेष उपयोगी है। रोग की अंतिम अवस्था में जबकि सभी वनौषधियाँ नाकाम साबित हो चुकी होती है, यह औषधि तेल रोगियों को राहत पहुंचाता है। केचुओं से मल के रुप मे निकली मिट्टी का प्रयोग भी औषधि के रुप में किया जाता है।इसे माइग्रेन (आधासीसी) की कारगर दवा माना जाता है। मल को अल्प मात्रा मे ऐसे रोगियों को दिया जाता है जो कि अपनी जीवनी शक्ति खो चुके होते है। राज्य के अधिकतर पारंपरिक चिकित्सक न केवल केचुओं के औषधीय उपयोगों को जानते हैं बल्कि उनका प्रयोग भी करते है। केचुओं का एकत्रण रात के समय किया जाता है। केचुओं को भोजन के रुप मे प्रयोग करने वाले जुगनु जिस क्षेत्र मे ज्यादा होते है उन्ही स्थानों से केचुओ का एकत्रण किया जाता है। इन क्षेत्रों से एकत्र किये गये केचुएं औषधिय गुणों से परिपूर्ण माने जाते है। वर्मीकल्चर तकनीकी मे प्रयोग किये जा रहे केचुओं को पारंपरिक चिकित्सक संशय से देखते हैं। वे औषधि के रुप मे स्थानीय प्रजाति के केचुए का ही प्रयोग करते है। पंकज अवधिया का मानना है कि पीढ़ीयों पुराने इस पारंपरिक ज्ञान की लोकप्रियता इसके प्रभावीपन की सूचक है। इस ज्ञान की वैज्ञानिक व्याख्या भावी पीढ़ी को इसे सहर्ष अपनाने के लिये प्रेरित कर सकती है।